'करिष्ये वचनं तव' – विशेषांक

भगवत् कृपा

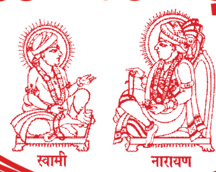

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 29 अंक : 4 | 15.7.2006 शनिवार (जुलाई - अगस्त) | प्रति अंक : 10.00

पप्पाजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं, पुकार करें हम प्रत्यक्ष वो होंगे...

ओहो! अमर गुणातीत भावना के व्यक्तिस्वरूप व अनेक चैतन्यों के आत्मप्राण प.पू. पप्पाजी का स्वधामगमन...! हृदय पर जैसे कई खरोचें पड़ने लगीं... उनका स्थूल सान्निध्य, दर्शन, उनका लाड़ - प्यार, प्रसाद, आशीर्वाद के लिए बार - बार उठता हाथ, गाल - सिर को मिलता स्नेहभरा स्पर्श, अपनेपन का अनोखा दिलासा देती उष्माभरी गोद... क्या ये सब अब कभी नहीं मिलेगा? यह विचार मात्र ही समग्र तंत्र को झंझोड़ देता है। अंतरात्मा को भीतर तक कंपकपा देता है। हमारी अनकों प्रकार की गल्तियों को गिने बिना निरपेक्ष प्यार का धोध अब कौन बहाएगा? अश्रुओं की धारा थमने का नाम नहीं ले रही। पर, तुरंत ही उनकी ही कृपा से मन को समझाया कि गुरु गुणातीत के आशीर्वाद से हम तो सदा सनाथ हैं। सो, पप्पाजी तो यहीं हैं। अपने भीतर, आस - पास अखंड रहने वाले हैं; हमें छोड़ कर पप्पाजी कहीं जा ही नहीं सकते - जा ही नहीं सकते। तभी तो लंदन के **प.भ. दिलीपभाई भोजाणी** ने ११ जून को प.पू. पप्पाजी की श्रद्धांजली की सभा में कहा ना कि –

सत्पुरुष ने एक बार हमारे जीवन में स्थान लिया हो और हम उन्हें वफादार होकर जिएं, तो वे जाएं ही नहीं...

१६ अप्रैल से ही प.पू. पप्पाजी की तबियत खूब नाजुक होने के समाचार मिल रहे थे... गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों – दिल्ली, पवई, ब्रह्मज्योति, हरिधाम - सोखड़ा, सांकरदा, समढियाळा, माणावदर से सभी स्वरूपों - संतों - मुक्तों इकट्ठे होने लग पड़े थे। यहाँ तक कि अमेरिका -लंदन के मुक्त भी विद्यानगर दौड़ पड़े और सभी को ऐसा लगता था कि अब शायद स्वयं प.पू. पप्पाजी ने ही देह छोड़ने का संकल्प कर लिया है... दूसरी ओर **'गुणातीत ज्योत'** की बहनें अत्यधिक श्रद्धा एवं विश्वास से तीव्र भजन - प्रार्थना कर रही थीं। 'भगवान तो भक्तों के वश हैं' – इसकी दृढ़ प्रतीति प.पू. पप्पाजी ने सभी के अंतर में करा दी। १६ अप्रैल से २८ मई तक अपनी देह पर अत्यधिक दर्द सहन करके भी स्थूल देह रख कर सबसे तीव्र भजन करवा कर प.पू. पप्पाजी ने मानो खूब बल दे दिया और हर एक को मानसिक रूप से तैयार कर दिया।

और…**२८ मई** की सुबह करीब **११:३० बजे** प.पू. पप्पाजी के स्वधामगमन की खबर दिल्ली – प.पू. गुरुजी को मिली… यह सुनते ही प.पू. गुरुजी बाथरूम में अकेले बैठ कर फूट कर रो पड़े… १९५४ से गुरुहरि योगीजी महाराज, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और प.पू. बा के जोग में प.पू. गुरुजी थे – यूं उनकी सेरेछाया में बीते जीवन का ५० साल का एक लंबा अरसा जो था! इन बीते हुए लमहों की कसक अश्रुओं के रूप में उभर आईं। पर, थोड़ी ही देर में प.पू. गुरुजी ने विद्यानगर जाने के आयोजन में अपने आपको व्यस्त करके खुद को संभाल लिया।

साथ ही हर प्रसंग को हर पहलू से देखने वाले एवं शार्प मेमरी वाले प.पू. गुरुजी ने ‘स्वामिनारायण प्रकाश’ की पुरानी फाईल से ढूंढ निकाला कि – **१९६६ में २८ मई** की सुबह ही ठहराव प्रस्तावित करके **संस्था ने प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी को विमुख जाहिर किया था** और आज… इसी दिन – **२८ मई २००६** को ही सुबह ११:०० बजे प.पू. पप्पाजी ने स्वतंत्र रूप से देह त्याग कर सभी को प्रतीति करा दी है कि गुरुहरि योगीजी महाराज ने तो उन्हें विमुख किया ही नहीं था। **तभी तो चालीस साल बाद इसी दिन अपने प्यारे मानसपुत्र को गले लगाने उन्होंने मानो बुला लिया**!

इस मौके पर अनादि महामुक्त प.पू. भगतजी महाराज का प्रसंग सहज याद आ जाता है। अ.म.मु. भगतजी महाराज मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी की महिमा का ही रसपान करते - कराते थे। तत्कालीन समाज के पवित्रानंदस्वामी को स्वामिश्री के प्रति तेजोद्वेष था। सो, उन्होंने अ.म.मु. भगतजी महाराज को एक दिन गुस्से में कह दिया कि – मैं तुझे विमुख करके छोड़ूँगा। तब सहजता से अ.म.मु.भगतजी महाराज बोले –
स्वामी! आप तो मुझे क्या विमुख करोगे? अब तो श्रीजी महाराज मुझे विमुख करना चाहें, तो भी हो नहीं सकूँगा। पारसमणि से बना सोना, फिर पारसमणि द्वारा भी लोहा कभी नहीं बनता… व्यवहारिक रूप में (संस्था के) लोक दिखावे के लिए यह कहो या करवाओ भी, परतुं इसका कोई अर्थ नहीं!

यूं, २८ मई को ही प.पू. पप्पाजी को अपने पास बुला कर स्वयं गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. पप्पाजी की सम्यक् पहचान दे दी है।
हम तो – ‘प.पू. पप्पाजी बहुत बड़े - बहुत बड़े…’ यूं अपनी कक्षा के मुताबिक उनकी सीमित महिमा गाते रहते।
और… हम जानते हैं कि पप्पाजी ने कभी ढ़िंढ़ोरा नहीं पिटवाया कि वे ‘योगी’ के हैं। उनके कार्य यह बोलते हैं।
प.पू. पप्पाजी का एक सूत्र है –
‘स्पीक लेस, वर्क मोर; लॅट यॉर वर्क स्पीक फॉर यू।’
२८ मई को ही उन्होंने स्वयं शरीर छोड़ा कहो या गुरुहरि योगीजी महाराज ने उन्हें सम्मानपूर्वक अपने पास बुला लिया कहो – ‘वे योगीजी के थे’ – इस तथ्य की वो बिना कुछ बोले प्रतीति करा जाता है।

देश - विदेश के सभी संत, युवक, बहनें, मुक्तों दिल दहलाने वाली यह खबर सुनते ही भरे हृदय से अपने प्राण प्यारे प्रभु के अंतिम दर्शन के लिए दौड़ पड़े… शाम की फ्लाईट से प.पू. गुरुजी, थोड़े मुक्त व बहनें अमदावाद पहुँच गईं। अमदावाद एयर पोर्ट से निकल कर वे सीधे विद्यानगर पहुँचे। वहाँ ‘प्रभुकृपा’ में बर्फ के आसन पर विराजमान प.पू. पप्पाजी की दिव्य देह के दर्शन किए और पूजन करके हार अर्पण किया। देह छोड़ने के बाद भी मुख पर वही करुणा, भक्तवत्सलता, बंद आँखें - मानो ध्यानमग्न! ऐसा लगता था कि अभी ही आँखें खोल कर हमारी ओर देखेंगे और हाथ उठा कर आशीर्वाद देंगे।

कभी अलविदा मत कहो मुक्तों ....

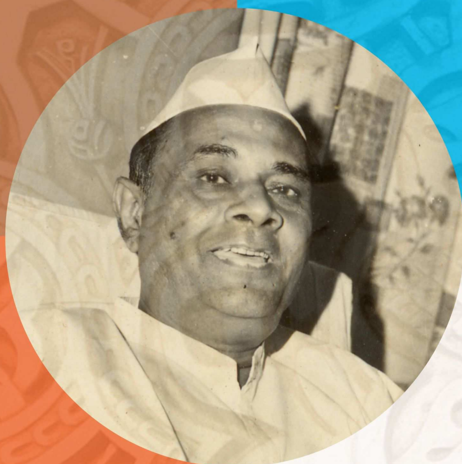

है शाश्वत संबंध पप्पाजी का मुक्तों

गुणातीतस्वरूप प.पू. पप्पाजी की दिव्य देह को देख कर एक विचार यह भी आता रहा कि – प्रगट स्वरूप जब देह छोड़े, तो उनसे जुड़े हम भक्तों का श्वास भी उसी समय क्यों नहीं रूक जाता? पर, दूसरे ही क्षण सोचा कि आख़िरी सांस तक तो वे हमारी हर प्रकार से परवरिश करते ही रहे; अब हमारे वर्तन से उन्हें जीवंत रखने की जिम्मेदारी हम पर आई है... उनकी सुवास फैलाने **उनके कार्य को बहता रखना – वही उनसे हमारी सच्ची प्रीति कही जाए!**

२९ मई की दोपहर १२.०० बजे गुणातीत ज्योत के 'पंचामृत' हॉल में प.पू. पप्पाजी का दर्शन करने प.पू. गुरुजी दोबारा गए। उसी दौरान उपस्थित सभी मुक्तों ने प.पू. पप्पाजी का पूजन करके हार अर्पण किया। दोपहर के बाद करीब चार बजे प.पू. पप्पाजी को पालकी में बिठाया। प.पू. पप्पाजी जब तक स्थूल देह में रहे, तब तक गुणातीत ज्योत की बहनों का 'रक्षाकवच' बन कर जीए। अब दिव्य रूप से हर पल गुणातीत ज्योत की वे रक्षा करते रहें — इसी भावना से प.पू. पप्पाजी की पालकी को गुणातीत ज्योत की परिक्रमा कराई। और...फूलों से सुसज्जित रथ में प.पू. पप्पाजी की पालकी रख कर **'पप्पाजी अमर रहो'** के जयनाद से सभी ने **'पप्पाजी तीर्थ'** पर अंतिम संस्कारविधि करने प्रयाण किया। संतों, अनुपम मिशन व गुणातीत प्रकाश के भाईयों, बहनों और मुक्तों का समुदाय भरे हृदय से पीछे - पीछे इस यात्रा में जुड़ गया। रास्ते में **'ब्रह्मज्योति'** के मुख्य द्वार पर अनुपम मिशन के भाईयों -मुक्तों ने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

पाँच बजे के करीब अंतिमयात्रा 'पप्पाजी तीर्थ' पहुँची। वहाँ गुणातीत स्वरूपों, संतों, युवकों ने प.पू. पप्पाजी का पूजन - आरती करके **गुणातीत ध्वज** अर्पण किया। सर्वप्रथम संतों ने पालकी उठाई... तत्पश्चात् भाईयों - मुक्तों ने पालकी को कंधा दिया और पालकी को अंत्येष्टि के स्थान पर ले गए। थोड़ी ही देर में कल्याणदाता प.पू. पप्पाजी की देह काष्ठ से ढक गई। इसी दौरान प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने **गुणातीत ज्योत की बहनों के भजन, सेवा, स्थिरता और समता** से खूब राजी होते हुए आशिष प्रदान किए।

फिर समय आया प.पू. पप्पाजी की पार्थिव देह को अग्नि देने का! शास्त्रों के अनुसार स्त्रियाँ अंतिम संस्कारविधि नहीं कर सकतीं, पर... अंतिम संस्कार करने का हक तो वारिसदार का होता है। सो, प.पू. बेन द्वारा प्रज्वलित एक दीपक से प.पू. पप्पाजी के वारिस के रूप में पू. ज्योतिबहन, पू. हंसा दीदी, पू. देवी बहन व पू. जसु बहन ने मशाल जला कर भाईयों को दी। और... इन भाईयों द्वारा अग्नि प्राप्त करते ही अनेकों के मुक्तिदाता व निरपेक्ष प्रेम का धोध बहा कर अनंत जीवों के कल्याण के लिए जिन्होंने पंचभूत की देह धारण की ऐसे प.पू. पप्पाजी की देह पंचतत्त्व में विलीन हो गई! पर, **उस परम तत्त्व की ज्योति तो पृथ्वी पर 'यावच्चन्द्रदिवाकरौ' अखंडित रहेगी।**

हर गुणातीत स्वरूप अपनी अलग ढब लेकर पृथ्वी पर अवतरित होता है। प.पू. काकाजी ने स्थूल शरीर अचानक ही छोड़ दिया था। ना कोई ऐसी बीमारी, ना ही कोई पूर्व अंदेशा। किसी को कुछ सोचने करने का मौका ही नहीं दिया। सभी को – बस अपनी मूर्ति में लयलीन रखे। तो दूसरी ओर प.पू. पप्पाजी ने बीमारी का प्रकरण रखते हुए तीव्र भजन - प्रार्थना कराके हर एक को अनहद् बल दिया!

सच, समग्र अक्षरपुरुषोत्तम संप्रदाय और विशेष रूप से बृहद् गुणातीत समाज युगों - युगों तक प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी का ऋणी रहेगा। करोड़ों वंदन हो गुरुहरि योगीजी महाराज को – जिन्होंने हमें प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी जैसी गुणातीत विभूतियों की अनुपम भेंट मौज में – बख़्शिश में दी। श्री अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध

तात्त्विक उपासना के मर्मज्ञ प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी के बलिदान को गुणातीत समाज का कोई भी मुक्त कभी भुला नहीं पाएगा।

स्थूल देह से आज भले ही वे हमारे समक्ष ना हों, परंतु दिव्यस्वरूप में हमारे चैतन्य की हर प्रकार से प्रगति कराने - परवरिश करने वे **'तत्त्व से'** पल - पल हमारे आस पास ही हैं और हमेशा रहेंगे। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने तो २०० साल पहले अपने आश्रितों को शाश्वत आशीर्वाद दिए हैं कि – ***गुणातीत विभूति एक बार धरती पर आती है, तो कभी जाती ही नहीं!*** स्वामी के ये कॉल प.पू. गुरुजी ने ३० मई की दोपहर गुणातीत ज्योत के प्रांगण में पारायण की शुरुआत में पढ़े थे।

प्रकरण १ की २८८वीं बात –

एक हरिजन ने पूछा कि ऐसा जोग नहीं रहे और कसर रह जाए, फिर कैसे होगा (टलेगी)? उसका उत्तर किया कि – जिसने ऐसा जोग दिया है, वे ही कसर टलवाएंगे।

प्रकरण १ की २९४वीं बात –

बड़े (संत) परोक्ष हो जाएं, उसके बाद भी वे अपने आश्रित की आज की तरह खबर रखते हैं या नहीं रखते? उसका उत्तर किया कि – वे परोक्ष हों, ऐसे हैं क्या? हाँ, आज की भांति दिखाई नहीं दे; पर खबर तो ऐसी की ऐसी ही रखेंगे। वे यदि खबर नहीं रखें, तो ब्रह्मांड की स्थिति कैसे रहे?

प्रकरण ५ की ७०वीं बात –

हमारी तो आयु बाईस साल पहले पूरी हो गई थी और देह छोड़ने का तो संकल्प ही नहीं; क्योंकि आयु से देह छूटनी हो तो उसकी अवधि होती है। लेकिन, मैं तो चिरंजीवी हूँ और तुम सभी की देह तो पाँच - दस वर्ष में शांत हो जाएगी।

इस बात का मर्म बताते हुए प.पू. गुरुजी ने कहा भी कि –

स्वामी परभाव में यह बोले हैं। 'अक्षरब्रह्म' महाराज का शरीर है। और... 'अक्षरब्रह्म' के साधर्म्य को पाए ब्रह्मस्वरूप संत में महाराज आज भी अखंड रहे हैं। सो ही स्वामी परभाव में बोले कि तुम सभी की देह तो पाँच - दस वर्ष में शांत हो जाएगी, पर मैं - 'अक्षरब्रह्म' - जो महाराज का शरीर हूँ, वो तो चिरंजीवी हूँ।

सो, **मन के भुलावे में ना आकर स्वामी की इस बात का तथ्य समझ कर खूब दृढ़ विश्वास से हम मानें ही कि ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी चिरंजीव ही हैं – 'तत्त्व से' वे हमारे साथ अब भी हैं ही।**

यूं, **गुणातीतस्वरूप प.पू. पप्पाजी ने कोई बीमारी के कारण नहीं, बल्कि स्वतंत्र रूप से शरीर छोड़ा है।** अपनी ७८ वर्ष की आयु में निजी सेवकों के पास वे स्पष्ट रूप से बोले थे कि मैं ९० वर्ष तक रहूँगा... इससे ख्याल पड़ता है कि हम सभी की आध्यात्मिक प्रगति कराने, हम सब को सेवा देकर धन्य बनाने, तीव्रता से भजन करते करने उन्होंने यह बीमारी ग्रहण की थी। वर्ना तो, ९० वर्ष की आयु में भी गुरुभक्ति अदा करने की उनकी झंखना - प्यास -तरस ऐसी कि २००५ में मुंबई में गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और गुरुहरि योगीजी महाराज की प्रथम स्वर्ण मूर्ति की स्थापना महोत्सव के समय निमंत्रण कार्ड देख कर उन्होंने पवई - मुंबई जाने की इच्छा जाहिर करी थी।

देखें तो – कृपासाध्य प.पू. पप्पाजी ने शुरुआत से ही धीर गंभीर स्वभाव ग्रहण किया था। किशोर आयु में ही घर की आर्थिक स्थिति को समझ कर उन्होंने पूरी जिम्मेदारी संभाली। खुद के सुखों की परवाह ना करके आदर्श कुटुंब प्रेम बढ़ाते रहे। **प.पू. काकाजी** की परावाणी में हमने कई बार सुना है कि –

मेरा भाई खूब प्रमाणिक, मेरा भाई खूब चोक्कस, मेरा भाई स्वधर्म का राजा, मुझे पढ़ने लंदन भेजा। मेरा भाई बचत करके हर महीने १०० पाऊंड मुझे भेजता था।

यही था इन दोनों भाईयों का निर्मल बंधु प्रेम और करमसद के असली 'पाटीदार' दादु - बाबु की अक्षरधाम की दिव्य जोड़ी का दिव्य अनुपम स्नेहलभाव! तभी तो **प.पू. काकाजी** कहते –

'अमारां बन्नेनां मज़ियारां हैयां!'

दरअसल प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी एक ही सिक्के के दो पहलू कहे जाएं।

प.पू. पप्पाजी तो जेस्चर से बताते भी कि –

हथेली के अंदर का भाग यानि — गोरे रंग के 'काकाजी'

और

हथेली का ऊपरी भाग – थोड़ा श्याम रंग वो 'पप्पाजी'।

हम में भले अनेक प्रकार की भेददृष्टि रही होगी। हमारी ओछी विचारधाराओं ने एवं क्षुद्र मन - बुद्धि के नापतोलों ने इन दोनों भाईयों की बातों का 'भाष्य' करके इनमें भेद उपजाए होंगे, पर इन दोनों भाईयों की अखंडित दिव्य एकता तो 'अक्षरधाम' की थी।

गुरुहरि योगीजी महाराज ने भी तो कहा था कि – **तुम दोनों भाई मिल कर जो करो, उसमें मैं आ गया!**

प.पू. काकाजी कई बार कहते – **पप्पाजी में तुम मुझे देखना। और... वैसा ही – हरिप्रसाद और मेरा अद्वैत है... यह काम अकेले हाथ नहीं बना है।**

यह काम – यानि? **बहनों के लिए भगवान भजने की राह खोलनी** एवं **गुणातीत समाज का सर्जन!**

गुणातीत समाज का दस – दस सालों की विशिष्ट घटनाओं से भरा ५० साल का एक इतिहास है।

- १९५२ में प.पू. काकाजी को गुरुहरि योगीजी महाराज ने ज्ञानसमाधि का साक्षात्कार कराया
  और १९५५ / ५६ से —
  प.पू. काकाजी - प.पू. पप्पाजी व प.पू. सोनाबा के परिवार ने ताड़देव में एक संयुक्त कुटुंबभाव से जीने की शुरुआत करी।
  फलस्वरूप, गुणातीत समाज पनपा।
- १९६६ में संस्था ने इस समाज को विमुख किया। मानो – इस एन्लाईटन्ड ग्रुप को गुरुहरि योगीजी महाराज ने अलग कर दिया!
- १९६६ से १९७६ तक आपसी आत्मबुद्धि और प्रीति से जुड़ा यह गुणातीत समाज
  प.पू. काकाजी के एकचक्री नेतृत्व में अग्रसर रहा।
  गुणातीत समाज का यह समय स्वर्ण युग कहा जाए, जब हम **'दादुभाई वाले'** कह कर पहचाने गए।
- १९७६ से १९८६ तक में गुणातीत समाज ज्योमॅट्रीकल प्रोग्रेशन में विकसित हुआ।
  पर, अलग - अलग प्रवाहों में बंटा और...
  १९८६ के मार्च में तो प.पू. काकाजी ने यकायक शरीर छोड़ दिया!

- १९८६ के बाद १९९५ में चैतन्यजननी प.पू. सोनाबा ने हम सब के बीच से विदाई ली...
- २००६ में प.पू. पप्पाजी स्वधाम सिधारे।

बिना कोई भेददृष्टि प.पू. पप्पाजी इस बृहद् गुणातीत समाज के छत्र बन कर रहे और साथ ही साधकों के लिए ध्रुवतारक बने हैं एवं स्वतंत्र रूप से हर एक के निजी भी बने! हर एक के भीतर में यह अनुभूति करा देना कि – 'पप्पाजी मेरे हैं' – वो गुणातीत सत्पुरुष के अलावा भला कौन करा सकता है?

हाँ, हमारा रखने के लिए, उनसे हमारा संबंध बनाए रखने, हमें निभाने के लिए उन्होंने कई बार प्राकृत ढंग से एकपक्षीय व्यवहार करा भी हो; पर, फिर **इन्होंने जॅस्चर्स से हमें इशारे दिए भी हैं कि –** ***मेरे अंतर की मर्जी तो यह है।*** और... गुरुहरि योगीजी महाराज की बोधकथा से हमने एक रहस्य को समझा है कि **– हम बैंगन के चाकर नहीं, बल्कि राजा के चाकर हैं।** सो, इनके बदले हुए रवैये के साथ **'मियाँ के चाँद से चाँद' – इस न्याय से हम अपनी सोच – अपने रवैये बदलें।**

प.पू. पप्पाजी के समग्र जीवन में दिखावा, आडंबर कभी किसी ने नहीं देखा। सचोट, स्पष्ट, सीधी, सरल जीवनशैली! हमारे लिए वे खूब सस्ते बने और हमारे लेवल पर ही हमारे जैसे ही बन कर रहे। **उन्हें कभी ऐसी चाहना नहीं थी कि लाखों लोग उनकी सभा में हों। हाँ, जितने हैं वे एक संयुक्त परिवार की भाँति प्रभु के होकर, प्रभु के आधार से आपस में मिलजुल कर ब्रह्मकिल्लोल करें –** ***यही थी उनकी जीवनभावना।***
इसीलिए वे दो बातें कहा करते कि –

- ***धाम, धामी और मुक्त ही सत्य!***
- ***चाहे कुछ भी छोड़ना पड़े - खोना पड़े, पर सभी अक्षरधाम के दिव्य कुटुंब के एक ही होकर संप, सुहृद्‌भाव, एकता रखते हुए जिएं! यह मेरे जीवन का मकसद है।***

सारे गुणातीत समाज को - बृहद् गुणातीत समाज को – सबको अक्षरधाम में साथ ही बैठना है।
प.पू. पप्पाजी का समग्र जीवन इन दो ही बातों में समा जाता है।

धाम, धामी और मुक्त ही सत्य ! – यह केवल उन्होंने उपदेश ही नहीं दिया, बल्कि उनकी जीवनशैली बनाई थी! गुरुहरि योगीजी महाराज ने जब से उनके जीवन में स्थान लिया, तब से आजीवन - एक सैकण्ड भी उन्होंने धाम, धामी और मुक्तों की सेवा - भक्ति के अलावा कोई भी - रंचमात्र भी व्यवहार - प्रवृत्ति करी हो या कहीं और दिलचस्पी रखी हो ऐसा नज़र नहीं आता। वे तो कहते भी – **बाकी सब तो जड़ कोटियाँ हैं। उसके लिए ज्यादा झंझट ना करें।**

एक बार प.पू. काकाजी - प.पू. पप्पाजी के बहनोई - श्री रावजीभाई मुंबई आने वाले थे और... उनके ही फ्लॅट में – जिसे आज हम **'आत्मीयता की गंगोत्री'** कह कर नवाजते हैं – उसी में वे रहते थे। पर, सहज ही प.पू. पप्पाजी बोले कि –
'उन्हें लेने के लिए गाड़ी स्टेशन नहीं जाएगी। वे अपने आप टेक्सी से आ जाएंगे। हम बोलते हैं ना कि गाड़ी योगी की है। रावजीभाई योगी के हैं क्या? सो **– गाड़ी देह के संबंधियों के लिए नहीं, बल्कि योगी से संबंध वालों के लिए ही दौड़ा सकते हैं!!'**
वचनामृत गढडा अंत्य. २१ के मुताबिक **'...हमें तो ऐसे जो दृढ़ सत्संगी वैष्णव हैं, वे ही सगे - संबंधी हैं और**

वही हमारी बिरादरी है और जीतेजी इन्हीं वैष्णव के साथ रहना है...’ इस बात का हूबहू दर्शन उनके जीवन में हुआ है।

खूब विपरीत परिस्थितियों में भी एक गुरुहरि योगीजी महाराज का ही कर्ताहर्तापन प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी ने माना। **‘योगी की मर्जी’ को ही उन्होंने पल - पल का जीवन बना दिया।** गुरुहरि योगीजी महाराज के अंतर का अभिप्राय जान कर हर आज्ञा - वचन अहोभाव से झेला और बापामय जीवन जिए। उन्होंने केवल ‘संबंध’ ही देखा। इससे भी अधिक – ‘मेरे ही शुद्धिकरण के लिए महाराज विरोधप्रकृति वाले मुक्तों को वर्ता रहे हैं’ – ऐसी अंतःकरण से परे की सोच पकड़ कर अद्‌भुत दृष्टि से आध्यात्मिक समतायुक्त निर्दोषबुद्धि रखी। उन मुक्तों को महाराज का ही स्वरूप मान कर स्वीकारा और ‘योगी’ के संबंध से सभी को निभाते ही रहे - निभाते ही रहे... सब की क्षतियाँ, भूलें और मान - अपमान अपने भीतर समाते गए - समाते ही गए...भक्तों को लाड़ लड़ा कर उनके मनोरथ पूरे करते रहे।

यूं निष्ठा, माहात्म्य, प्रशांत धैर्य, पवित्रता, पारदर्शकता, प्रामाणिकता, निर्लेपता, दिव्यता, सादगी, सरलता, नियमितता, सेवा की तत्परता, प्रभुता, प्राप्ति की मस्ती से युक्त दिव्य गुणों के धारक होते हुए भी प.पू. पप्पाजी **मुक्तों के दास बन कर** जीए। हम सभी ने प.पू. गुरुजी से सुना है कि मुंबई में संस्कृत का अध्ययन करते नव योगेश्वरों के लिए ताड़देव से बहनों द्वारा तैयार किए नाश्ते के डिब्बे दोनों कंधों पर लटका कर प.पू. पप्पाजी ट्रेन से (भागवताचार्य के आश्रम -घाटकोपर) ले जाया करते थे। वह इसलिए कि उन्हें यह महिमा थी कि – ‘योगी’ के संबंध वालों की सेवा का भाग्य मुझे कहाँ से?

भगवान रखे ऐसे दिव्य शाश्वत् स्वरूपों के जन्म - मरण, पृथ्वी पर आना - जाना इत्यादि प्रक्रिया होती ही नहीं। वह तो अविनाशी दिव्य तत्त्व, अमर चिरंजीव, अजन्मा ही है। तभी तो **उनकी स्मृति** मात्र जीवों के मन को प्रकाश, शांति, आनंद से भर कर **भगवान में जोड़ देती है।**

वे स्मृतियाँ जैसे कि –

❋ प.पू. काकाजी १९५६ में आफ्रिका गए थे। उन दिनों एक बार दोपहर को प.पू. गुरुजी जब ताड़देव गए, तो प्रवेश करते ही उन्हें सुनाई दिया कि प.पू. पप्पाजी पू. तारा बहन को कह रहे थे कि – काकाजी हैं नहीं और ये दिलीप को काकाजी से खूब लगाव है; पर मेरे साथ उसे ज्यादा जमता नहीं है, सो उसे संभालना। यह बात प.पू. गुरुजी को भीतर तक खूब स्पर्श कर गई कि अहो! पप्पाजी कैसे हैं? जानते हैं कि मैं उनसे कतराता हूँ, फिर भी उन्हें मेरी कैसी फ़िकर? और... हम सभी जानते हैं कि जब तक प.पू. पप्पाजी स्थूल देह से रहे, उन्होंने प.पू. गुरुजी को कैसा प्रेम दिया – अपनापन दिया!

❋ मार्च १९८६ में प.पू. काकाजी की अंत्येष्टि विधि करने के बाद प.पू. गुरुजी एवं दिल्ली के मुक्त दिल्ली लौटने निकल रहे थे, तब प.पू. पप्पाजी स्वयं विद्यानगर से बड़ौदा स्टेशन पर उन्हें विदा करने आए!

❋ प.पू. काकाजी के शरीर छोड़ने के बाद प.पू. गुरुजी जब पहली बार विद्यानगर जाने पू. मल्कानी अंकल के साथ अमदावाद एयरपोर्ट पर उतरे, तो देखा कि विद्यानगर से प.पू. पप्पाजी स्वयं उन्हें लेने एयरपोर्ट पर पधारे थे। प.पू. गुरुजी साश्चर्य बोल पड़े – पप्पा आप!

प.पू. पप्पाजी सहजता से बोले कि – **‘मैं तो काका को रिसीव करने आया हूँ!!’**

❋ प.पू. काकाजी महाराज के शरीर छोड़ने के बाद सन् २००० तक - जब प.पू. गुरुजी ने प.पू. पप्पाजी के स्वास्थ्य को देखते हुए स्वयं मना करी कि – **पप्पा ! आप यह परिश्रम ना लो, मैं अब इन दिनों में कभी भी आपके आशीर्वाद लेने विद्यानगर आ जाया करूँगा** – तब तक प.पू. गुरुजी के प्रागट्य दिन निमित्त मार्च के महीने में दिल्ली अचूक आते रहे और ढेर स्मृतियाँ दीं।

❋ प.पू. गुरुजी की बाईपास सर्जरी के समय लीलावती हॉस्पिटल में मुंबई पधारे और खूब अपनेपन से प.पू. गुरुजी को कहा – ऑप्रेशन ठीक हो जाएगा, तुम किसी कल्पना - विचार में नहीं जाना। दिव्य माँ के रूप में वहाँ भी प.पू. गुरुजी को अर्धसभानवस्था में कॉफी पिला कर स्मृति दी, जिसका प.पू. गुरुजी को एनेस्थिसिया की असर पूरी उतर जाने के बाद भी पूरा ख्याल रहा!

यही नहीं, ऑप्रेशन के बाद जब प.पू. गुरुजी 'ब्रह्मज्योति' आराम करने गए, तो वे **अपने ड्राईवर को** गाड़ी लेकर प्रभुकृपा से ब्रह्मज्योति भेजते, ताकि रास्ते में प.पू. गुरुजी को कहीं भी झटका लगाए बिना वह आराम से 'प्रभुकृपा' लेकर आए।

❋ एक बार मार्च में प.पू. गुरुजी के प्रागट्य दिन निमित्त प.पू. पप्पाजी दिल्ली आए हुए थे। तब बातों - बातों में प.पू. गुरुजी ने प.पू. पप्पाजी को मजाक में कहा कि स्कूल की सर्टीफिकेट में मेरे जन्मदिन की तारीख १३ जून लिखी है। उस हिसाब से १३ जून को भी मेरा जन्मदिन आता है। और... प.पू. गुरुजी द्वारा करी इस मजाक को भी सच लेकर - याद रख कर लाड़ लड़ाने प.पू. पप्पाजी ने १३ जून को फेक्स से जन्मदिन के आशीर्वाद भी भेजे!

❋ १९९० में एक बार प.पू. पप्पाजी दिल्ली आए हुए थे। उन्हें किसी के घर पधरामनी के लिए जाना था। तो मुझे भी साथ चलने कहा। इतने में साथ में ही खड़े किसी मुक्त ने कहा कि – पप्पाजी ! वहाँ तीसरी मंज़िल पर जाना है और आनंदी को हार्ट की तकलीफ है। तब प.पू. पप्पाजी एकदम बोले –

'हुं एने मारा खभा पर बेसाडीने लई जईस...' (मैं इसे मेरे कंधों पर बिठा कर ले जाऊँगा।)

यह थी उनकी भक्तवत्सलता ! पधरामनी में जाने के लिए जब प.पू. पप्पाजी ऐसा बोले हैं, तो मुझे यकीन है कि अक्षरधाम तक गुणातीत स्वरूप मुझे जरुर ऐसे ही ले जाएंगे।

❋ मेरी रीढ़ की हड्डी में तकलीफ होने के कारण इलाज कराने प.पू. पप्पाजी मुझे फ्लाईट में अमदावाद ले जा रहे थे। तब सीट के आगे की टेबल प.पू. पप्पाजी ने खुद खोल कर दी और जल्दी से हाथ पौंछने के लिए तौलिया दिया। यह जेस्चर करके उन्होंने मानो मेरी चित्तपट्टी पर जीवनभर के लिए स्मृति अंकित कर दी। तब से जब भी मैं फ्लाईट में जाती हूँ, तो प.पू. पप्पाजी जैसे साथ में ही बैठे हैं – ऐसा लगता है।

यूं, अपना निर्व्याज प्रेम देकर उन्होंने अनेकों को चिरंजीव स्मृतियाँ दी हैं। संबंध में आए सभी को 'प्रत्यक्ष' की निष्ठा दृढ़ कराई। ख़ुद भजन करके मुक्तों को पारमेश्वरी शक्ति के कई कितने अनुभव कराए और भजन करना सिखाया है।

कलियुग में **बहनों को भगवान भजने की राह पर अग्रसर रखना** लोहे के चने चबाने जैसा दुर्गम कार्य था। तभी तो **प.पू. काकाजी** बोले थे –

'पप्पा नहीं होते तो बहनों के यह काम की मैं हिम्मत ही नहीं करता।'

यूं, प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी की युगल जोड़ी ने गुरुहरि योगीजी महाराज के वचन को स्वातिबिन्दु की तरह झेल लिया। अपने दिव्य प्रेम में डुबो कर पाँच सौ बहनों को एक साथ समूह में जीवन व्यतीत कराना – एकांतिक धर्म सिद्ध कराना – यही प.पू. पप्पाजी की दिव्यता, विशालता, करुणा एवं उनके अद्भुत कल्याणकारी विभूति होने व उनकी पारमेश्वरी शक्ति का अपने आप सम्यक् परिचय दे जाता है।

गुरुहरि योगीजी महाराज से जब बहनों के भगवान भजने के बारे पूछने प.पू. पप्पाजी गए कि –

बापा! कांतिनी बहनोनुं शुं करवुं... (बापा! कांति की बहनों का क्या करना है...)

तब गुरुहरि योगीजी महाराज ने कहा –

बहनो भगवान भजे तो शुं खोटुं? महाराज जोग आपी देशे।

(बहनें भगवान भजें तो क्या गलत है? महाराज संजोग दे देंगे।)

सच! **इस कार्य हेतु प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी एवं पू. सोनाबा — इन तीनों ने खूब कसनी सही है।**

आज राजमार्ग पर जो हम आनंदकिल्लोल कर रहे हैं, उसकी आधारशिला – नींव में ये तीनों विभूतियाँ समाई हैं।

हमारी भेददृष्टि के कारण —

इनमें से किसी को भी अगर हम भूल जाएं या छोड़ें, तो हम से अधिक ओछा – कृतघ्नी कौन ?

'करिष्ये वचनं तव..पप्पाजी अमर रहो !'

इन गुणातीत स्वरूपों ने देने में कोई कसर नहीं छोड़ी, पर हमारे लेने में कसर रही है।

प.पू. काकाजी ने तो **'ब्रह्मप्रवाह'** पुस्तक में खूब कृपा करके हमें स्पष्ट शब्दों में मार्गदर्शन भी दिया है कि –

पू. बापा ने प्रसन्नतापूर्वक जिस कारण दूर किया है उसका मकसद समझ कर, वह लक्ष्य पूरा कर ही लेना...

हमें एकांतिक धर्म सिद्ध करना है। सो, पू. बापा मुक्तों की ब्रेक रखते ही रहते हैं।

और

संकल्पों की बीमारी टालने की दया करते हैं...

*उन **सभी अलौकिक भूमिका को चूर - चूर कर देने पू. बापा ने दूर किया है।***

*सो, अखंड आध्यात्मिक संबंध दृढ़ करने की ही तान रखना। **(पृष्ठ ४०-४१)***

हम एक ऐसे समाज का सर्जन करना चाहते हैं –

जो जीतेजी ही सर्व प्रकार से अक्षरधाम का ही सुख लेता हो,

जहाँ भेदभाव नहीं, रागद्वेष नहीं, ये बड़े - ये छोटे ऐसे भेद नहीं

और

आंतरिक एकता व दिव्य एकता से जीवन जीने वाला समुदाय।

पू. बापा की वह योजना थी।

*उनके संकल्प से ही वह **पूर्ण करनी बाकी रही। (पृष्ठ - १५२)***

साथ ही – **प.पू. पप्पाजी** ने भी ब्रह्मसूत्र दिया है – ***'संबंध वालों में महाराज देखो!'***

सो, इनके इस सूत्र के मर्म को समझ कर अर्जुन की भाँति *'करिष्ये वचनं तव'* की प्रतिज्ञा लेकर अब हम समग्रभाव से – संयुक्त रूप से चलें।

फलस्वरुप, पप्पाजी ने जब इसी बात को अपनी 'मूर्ति' कही है, तो हम में इनकी 'मूर्ति' को प्रगटाने में – पूर्णाहुति कर लेने में देर भी नहीं लगेगी।

प.पू. पप्पाजी के स्थूल अस्तित्व के विरह में हम रोते रहें, डूबे रहें, उदासीन रहें – वह प.पू. पप्पाजी के प्रति का हमारा लगाव नहीं कहा जाएगा; बल्कि उनके कार्य को निरंतर बहता रखें वही सच्ची श्रद्धांजली है।

और... **उनका कार्य था – हमें मानव से महामानव की भूमिका में ले जाने का!**

सो, उनके ही शब्दों में – 'बाकी सब तो जड़ कोटियाँ हैं; उसके लिए यानि – अन्य प्रवृत्तियों की ज्यादा झंझट ना करके' – हम जल्द से जल्द 'भागवती तनु' प्राप्त करके जीतेजी अक्षरधाम का सुख अखंड भोगते हो जाएं और अन्यों को भी बाँटे - वही उनको 'अमर' रखने का एकमात्र साधन है।

तो हे पप्पाजी! हमारी साधना तो आपने करी है। अब हमें जो जीना है, वो भी आपने स्वयं जीकर – डॅमोन्स्ट्रेट करके बताया... अब हमारे विचार, वाणी और वर्तन में आपका ज्ञान – आपका सिद्धांत ही निरंतर बहता दिखाई पड़े। आपकी मूर्ति की स्मृति, आपके दिए लाड़ - प्यार को कभी ना भूलें... **बृहद् गुणातीत समाज में दिल की सच्चाई से भावात्मक एकता से एकाकार होकर जिएं...** ऐसे हम सच्चे सहृदयी बनें – यही आपके **प्रागट्य दिन – १ सितंबर** और **रक्षाबंधन – ९ अगस्त** के अवसर पर शाश्वत रक्षाकवच पाने याचना!

– प.पू. आनंदी दीदी द्वारा संकलित...

✡✡✡

अलविदा पू. ललिताबा...

गुणातीत समाज के कई मुक्तों को तो शायद अभी तक यह खबर मिल भी नहीं पाई होगी कि हमारे प.पू. गुरुजी की पूर्वाश्रम की मातुश्री '**ललिताबा**' ने ३० मई, मंगलवार की सुबह अचानक ही हम सब के बीच से विदाई ले ली है! सर्वप्रथम तो उनके पुनित चरणों में कोटि - कोटि वंदन... जिन्होंने हमें ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी के मानसपुत्र प.पू. गुरुजी जैसी विभूति की अनमोल भेंट दी! हम में से जो भी पू. बा को एक बार भी मिला होगा, वह उनका प्रेम व अत्यधिक वात्सल्यभरा स्पर्श भुला नहीं पाएगा...

पिछले तीन - चार महीने से प.पू. पप्पाजी की नाजुक तबियत के समाचार मिलते, तो पू. बा एकदम चिंतित हो उठते... कई बार तो बहनें उन्हें समाचार देने में हिचकती कि कहीं पू. बा को एकदम सदमा ना लग जाए। २८ मई की सुबह करीब ११:३० बजे प.पू. पप्पाजी के स्वधामगमन की खबर दिल्ली मिली... पू. बा को यह खबर तो देनी ही थी। जैसे ही उन्हें यह खबर दी, उसी समय से अत्यधिक ममत्व के कारण सारे दिन एक ही बात दोहराती - रटती रहीं... 'बहनें अब क्या करेंगी? पप्पाजी के बिना बहनें कैसे रहेंगी?' (बहेनो हवे शुं करशे? पप्पाजी वगर बहेनो केवी रीते रहेशे?) इसी विचार से अंदर ही अंदर सदमा लगने से कहो या उम्र का तक़ाजा कहो – उनके दिल पर असर होनी शुरु हो गई... बाद में डॉक्टर्स ने बताया भी कि २८ मई की रात को उन्हें मेजर हार्ट अटैक आ गया था। पर अत्यधिक स्ट्रोंग विलपावर होने के कारण पू. बा वो झेल गए।

प.पू. गुरुजी, प.पू. दीदी एवं कई मुक्त तो प.पू. पप्पाजी के अंतिम दर्शन के लिए २८ मई की शाम को ही निकल गए थे। २९ मई की सायं प.पू. पप्पाजी की अंत्येष्टिविधि के बाद प.पू. गुरुजी व सभी ने ब्रह्मज्योति पहुँच कर स्नान किया ही था कि दिल्ली से फोन आया कि पू. बा की तबियत खराब हो रही है। उनका शरीर ठंडा हो रहा है, सो उन्हें महावीर अस्पताल में ले जा रहे हैं। **तब से वो लगातार पूछती भी रहीं कि गुरुजी क्या कहते हैं?** और... फिर रात को ऐसा मेसेज आया कि उनका हार्ट सिन्क हो रहा है; सो हार्ट में एक पतला वायर डाल कर इलेक्ट्रीक शॉक देना पड़ेगा। ट्रीटमेन्ट देना शुरु किया, पर कोई रीस्पॉन्स नहीं मिला। और... ३० मई की सुबह ६:०० बजे तो खबर आई कि – पू. बा ने शरीर छोड़ दिया है!

पप्पाजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं

करोड़ों प्रणाम हो दिव्य चैतन्य की जननी को!

यह सुन कर मानो कानों को विश्वास ही नहीं हुआ कि ऐसा कैसे हो सकता है? अभी २७ मई की दोपहर को तो पू. बा पूरे दिन अक्षरज्योति में बहनों के साथ एकदम ठीक तबियत से रहे थे। गुड़इमली वाले आलू की सब्जी बहनों को बनानी सिखाई और गुरुहरि योगीजी महाराज की अपने घर पर पहली बार करी पधरामनी जो करवाई थी इत्यादि – सारी स्मृतियाँ करीं और सिर्फ दो दिन में तो...! परंतु प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी के प्रति उनकी प्रीति गहरी व आंतरिक थी, सो ही प.पू. पप्पाजी के शरीर छोड़ने का सदमा वे बर्दाश्त नहीं कर पाईं!

हाल ही में पू. बा **६ अप्रैल को रामनौमी** के दिन आरती के लिए आईं थी। जब उन्हें पता चला कि **प.पू. साहेब** रात को ११:३० बजे तक में हरिद्वार से ट्रेन द्वारा पहुँचेंगे, तो प.पू. साहेब के दर्शन की इच्छा से ९० वर्ष की आयु में भी वे मंदिर में बैठी रहीं। संजोगवश प.पू. साहेब को आने में थोड़ी देरी हो गई, तब भी वे इंतजार करके बैठी रहीं। जब साहेब आए तो खूब प्यारभरे हृदय से उन्होंने जैसे माँ बेटे को गले लगाए यूं प.पू. साहेब को गले लगाया। उस समय हाज़िर मुक्तों को वह दृश्य खूब छू गया था। प.पू. साहेब के साथ जो मुक्त आए हुए थे उन पर और वहाँ मौजूद दिल्ली के मुक्तों पर वो दृश्य हमेशा के लिए मानो अमिट छाप छोड़ गया!

गुणातीत ज्योत में जब यह खबर दी, तो **प.पू. ज्योति बहन** व **प.पू. हंसा दीदी** दिल्ली आने एकदम तैयार हो गए। **प.पू. हंसा दीदी** तो एक कौटुम्बिक भावना से **सहज बोल भी उठे** कि –

उनका लड़का नहीं जा सकता, हम लड़कियाँ तो जा सकती हैं ना?

इस बात पर प.पू. गुरुजी बेहद खुश हुए कि यही तो **प.पू. पप्पाजी** चाहते हैं – **'सारा गुणातीत समाज भावात्मक एकता से एकाकार वर्ते!'**

फिर भी... प.पू. हंसा दीदी को बड़ा मानते हुए भी प.पू. गुरुजी ने मना करने खूब अपनेपन से डाईरेक्टीव टोन में – आदेशात्मक रूप में कहलवाया कि –

'आपको दिल्ली नहीं जाना है; आप समझते क्यों नहीं कि फिलहाल आपको तो यहाँ 'ज्योत' में छोटी लड़कियों को संभालना है... यहाँ आपकी ज्यादा जरुरत है।'

दूसरी ओर — प.पू. दीदी ने दिल्ली जाने बारे पुछवाया तब भी प.पू. गुरुजी ने मना करवाया कि वहाँ स्मिता दीदी व सब बहनें, प्रभाकर, पुरी साहेब, राकेशभाई, शोभना भाभी इत्यादि सभी हैं; वे सब संभाल लेंगे। और सच! बहनों – हरिभक्तों ने अत्यधिक पूज्यभाव से, मान - सम्मान से प.पू. बा को शानदार विदाई दी और अंतिम संस्कारविधि करी।

३० मई की सुबह ६:३० बजे दिल्ली मंदिर में चल रही 'जपयज्ञ शिविर' के निमित्त भजन करने जो हरिभक्त इकट्ठे हुए थे, वे सभी तो सारा दिन - आख़िर तक फिर इसी सिलसिले में व्यस्त रहे। जो हाज़िर नहीं थे, उन्हें फोन द्वारा यह खबर दी गई। सुबह ७:३० के करीब पू. बा का पार्थिव शरीर मंदिर लाया गया। पीछे के कमरे में बर्फ की सिल्लीयों पर उन्हें रखा। **'स्वामिनारायण' धुन** के नाद से पूरा परिसर गूंज रहा था। दोपहर ३:०० बजे तक सभी के दर्शन के लिए उन्हें रखा गया। तत्पश्चात् अक्षरज्योति की बहनों, भाभियों और लड़कियों द्वारा फूलों से सजाई पालकी में पू. बा को लिटा कर प.पू. काकाजी महाराज की **'पुष्पसमाधि'** की परिक्रमा करवाई और सभी के लिए दर्शन हेतु उन्हें थोड़ी देर बैठक में रखा गया।

वहाँ आत्मीय स्वजन **श्री काशीरामभाई राणा साहेब, श्री मांगेराम गर्गजी, सौ. शीला आंटी** व सभी ने उनका पूजन करके शाल व हार अर्पण किए। प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी की अनुपस्थिति में करीब ३५० हरिभक्तों का एकत्रित होना उनकी पू. बा के प्रति की प्रीति व महिमा का दर्शन कराता है। उनसे ही तो दिल्ली के मुक्तों को प.पू. गुरुजी जैसे दिव्य राहबर की गोद जो मिली है। इससे भी अधिक – **श्री काशीरामभाई राणा साहेब** को प.पू. गुरुजी के प्रति

कितना लगाव व आदर होगा कि वे 'काकाजी लेन' के बाहर तक पू. बा को श्रद्धांजली देते हुए पैदल चल कर गए! और फिर... वहाँ से फूलों से सजे टेम्पो में रख कर पू. बा की पालकी को निगम बोध घाट ले जाया गया। वहाँ **प.पू. बा के पौत्र प.भ. गौरव** व अमदावाद से आए **प.भ. समीरभाई दवे** – जिन्हें पू. बा से खूब लगाव है - उन्होंने मिल कर **प.पू. बा को अग्नि दी और अंतिम संस्कार किया।**

हम सभी ने देखा था कि – पू. बा वैसे खूब स्वाभिमानी थे। शरीर छोड़ने में भी मानो उन्होंने यह स्वाभिमानी स्वभाव ही रखा! किसी से भी किसी प्रकार देह की तनिक भी सेवा नहीं कराई और शरीर छोड़ दिया।

वंशपरंपरा से स्वामिनारायण संप्रदाय से जुड़ा पू. बा का परिवार सन् १९५४ में गुरुहरि योगीजी महाराज एवं प.पू. काकाजी महाराज के संबंध में आया। खूब भक्तिभरे हृदय से पू. बा ने सभी स्वरूपों की सेवा करी। और... **प.पू. काकाजी के साथ तो उनका खूब अपनापन! प.पू. काकाजी के साथ मानो उनका विशिष्ट संबंध था।** कभी तो उनसे लड़ती - झगड़ती भी वो दिखाई पड़तीं। शायद बाह्यदृष्टि से देखने पर ऐसा भी लगे कि प.पू. काकाजी जैसी विभूति के साथ वे यूं लड़ती हैं? पर, दूसरी ओर सहज एहसास भी होता कि निर्गुण पुरुष – भगवानधारक संत के संग तो हर एक का अपना - अपना संबंध होता है। किसी का दासत्व का, तो किसी का सखा का संबंध। किसी का गुरु - शिष्य का, तो किसी का पिता - पुत्र का संबंध होता है। प.पू. काकाजी ने इन्हें यूं लाड़ कराके उनके जीव में स्थान लिया होगा।

पू. बा के हाथों भोजन खूब स्वादिष्ट बनता और सभी को खिलाने की भी उन्हें खूब उमंग रहती! गुणातीत समाज के जिस मुक्त ने सिर्फ एक बार भी पू. बा के हाथ का भोजन खाया होगा, वह बरसों के बाद भी उसका स्वाद भुला नहीं पाया होगा। ताड़देव में जब भी संत आते, तब ब्राह्मण परिवार होने के नाते पू. बा के घर से ही संतों के लिए प.पू. काकाजी भोजन मंगवाते। उनके हाथ के बने 'पातरे' (अरबी के पत्ते) की प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी खूब तारीफ करते और उनसे बनवाते। मार्च २००४ में दिल्ली से करीब सौ - सवा सौ मुक्त प.पू. पप्पाजी के दर्शन करने विद्यानगर गए, तब पू. बा भी साथ गए थे। पू. बा को देख कर मौन रहते प.पू. पप्पाजी की आँखों से खूब खुशी झलक उठी थी। और... पू. बा ने भी उस उम्र में बहुत उमंगभरे दिल से 'तेलपानी के पातरे' बना कर प.पू. पप्पाजी को खिलाए। ८७ - ८८ साल की उम्र और आँखों से भी कम दिखाई देना – परंतु अत्यधिक उमंग, उत्साह, जोश, भक्ति - सेवा की भावना... केवल स्वरूपों के प्रति ही नहीं, बल्कि कोई भी मुक्त पू. बा से मिलने यदि उनके घर जाए, तो वे उसे बिना कुछ खिलाए तो जाने ही नहीं देती थीं।

इनके **सुपुत्र प.भ. नीलकंठभाई एवं प.भ. जनकभाई** दोनों समय से पूर्व ही अक्षरनिवासी हो गए... **पति प.भ. धनप्रसादभाई** तो काफी समय पहले ही अक्षरधाम सिधार चुके थे। पोते - पोती भी तब सेट नहीं हो पाए थे। सो प.पू. ज्योति बहन, प.पू. भरतभाई व प.भ. घनश्यामभाई अमीन की आज्ञा से प.पू. दीदी सारे परिवार को मार्च २००३ में मुंबई से दिल्ली ले आईं थीं। दिल्ली के सभी हरिभक्तों के आनंद की तो सीमा ना रही। पू. बा के प्रेम व वात्सल्यभरी गोद में सभी ने खूब अपनापन महसूस किया... प.पू. गुरुजी की जननी होने के कारण सभी को उनके प्रति पूज्यभाव तो सहज ही था।

पू. बा सिर्फ तीन साल दिल्ली रहे, पर सभी को आज उनकी कमी खूब ही खलती है। ऐसा लगता है कि पू. बा अभी भी कहीं से आकर खूब प्यार करेंगी। बेशक, तभी तो पंद्रह दिन पहले ही उनकी छोटी पोती सौ. हेमाली (डिम्पल) के साथ शादी करे उनके **दामाद - श्री योगेनकुमार** इस अवसर पर फूट - फूट कर रोए। उत्तर भारत के मुक्तों तो पू. बा के हमेशा - हमेशा खूब ऋणी रहेंगे। करोड़ों प्रणाम हो दिव्य चैतन्य की इस जननी को!

❑

भजन...

(राग – बीते हुए लमहों की कसक...)

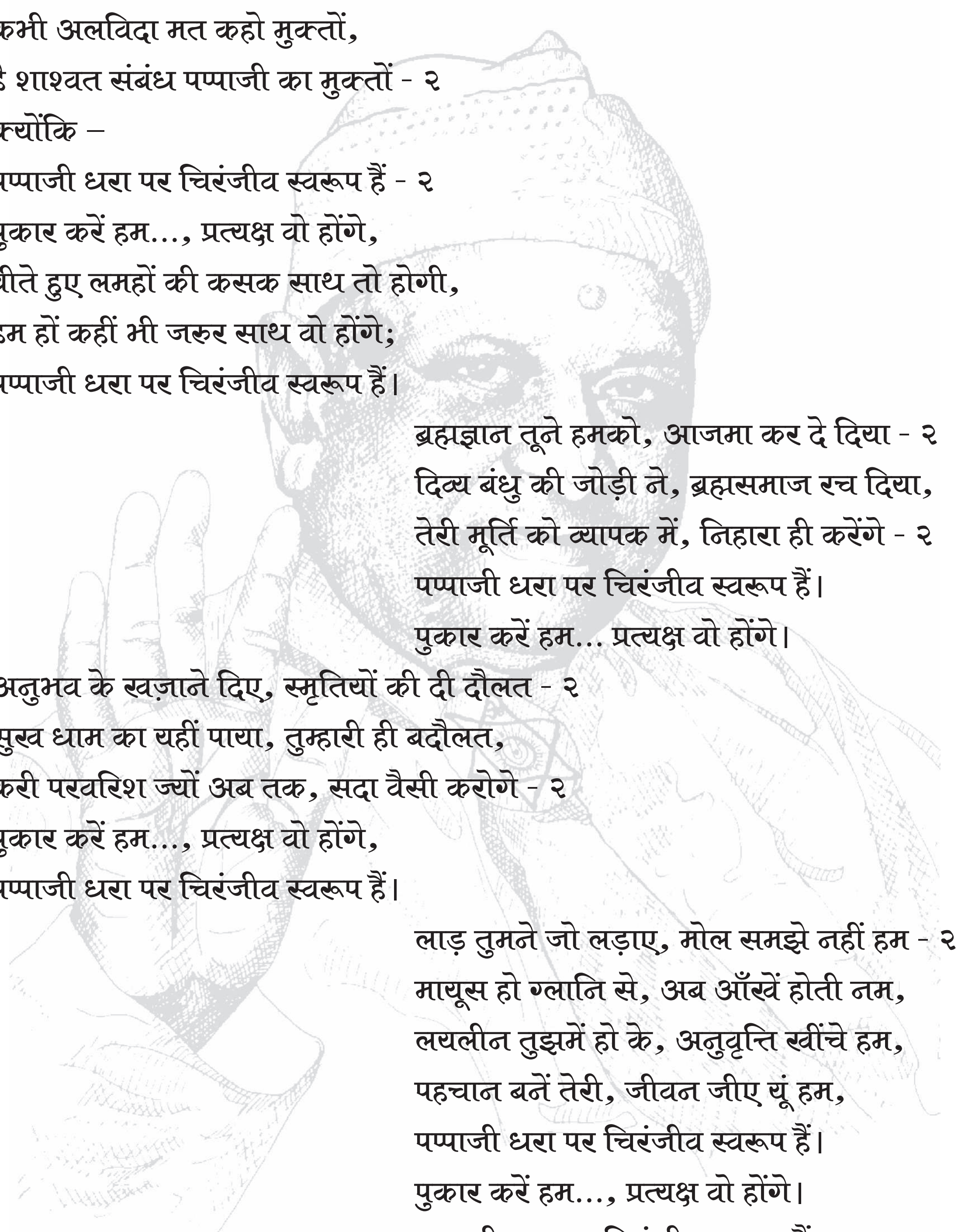

कभी अलविदा मत कहो मुक्तों,
है शाश्वत संबंध पप्पाजी का मुक्तों - २
क्योंकि –
पप्पाजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं - २
पुकार करें हम..., प्रत्यक्ष वो होंगे,
बीते हुए लमहों की कसक साथ तो होगी,
हम हों कहीं भी जरुर साथ वो होंगे;
पप्पाजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं।

ब्रह्मज्ञान तूने हमको, आजमा कर दे दिया - २
दिव्य बंधु की जोड़ी ने, ब्रह्मसमाज रच दिया,
तेरी मूर्ति को व्यापक में, निहारा ही करेंगे - २
पप्पाजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं।
पुकार करें हम... प्रत्यक्ष वो होंगे।

अनुभव के खज़ाने दिए, स्मृतियों की दी दौलत - २
सुख धाम का यहीं पाया, तुम्हारी ही बदौलत,
करी परवरिश ज्यों अब तक, सदा वैसी करोगे - २
पुकार करें हम..., प्रत्यक्ष वो होंगे,
पप्पाजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं।

लाड़ तुमने जो लड़ाए, मोल समझे नहीं हम - २
मायूस हो ग्लानि से, अब आँखें होती नम,
लयलीन तुझमें हो के, अनुवृत्ति खींचे हम,
पहचान बनें तेरी, जीवन जीए यूं हम,
पप्पाजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं।
पुकार करें हम..., प्रत्यक्ष वो होंगे।
पप्पाजी धरा पर चिरंजीव स्वरूप हैं - २

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	21.7.2006,	शुक्रवार	—	एकादशी, व्रत
(2)	दि.	26.7.2006,	बुधवार	—	श्रावण महीना प्रारंभ
(3)	दि.	05.8.2006,	शनिवार	—	पवित्रा एकादशी, व्रत – ठाकुरजी को पवित्रा के हार पहनाने।
(4)	***दि.***	**09.8.2006,**	***बुधवार***	**—**	***श्रावणी पूर्णिमा – राखी***

(सुबह 7:30 से 9:00 प.पू. गुरुजी की निश्रा में सच्चा रक्षाकवच प्राप्त करने प्रार्थना करेंगे। जो इस समय पर ना आ पाएं, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'राखी' बंधवा सकेंगे।)

(5)	दि.	13.8.2006,	रविवार	—	नाग पंचमी
(6)	दि.	14.8.2006,	सोमवार	—	रांधण छठ (षष्ठी)
(7)	दि.	15.8.2006,	मंगलवार	—	शीतला (सप्तमी), भारत का स्वातंत्र्य दिन
(8)	दि.	16.8.2006,	बुधवार	—	जन्माष्टमी, व्रत
(9)	दि.	19.8.2006,	शनिवार	—	एकादशी, व्रत
(10)	दि.	27.8.2006,	रविवार	—	गणेश चतुर्थी
(11)	**दि.**	**01.9.2006,**	**शुक्रवार**	**—**	**ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी का प्रागट्य दिन**
(12)	दि.	04.9.2006,	सोमवार	—	जलझीलनी एकादशी, व्रत
(13)	दि.	10.9.2006,	रविवार	—	गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज – स्मृति पर्व
(14)	दि.	16.9.2006,	शनिवार	—	श्रीजी महाराज – स्मृति पर्व
(15)	दि.	17.9.2006,	रविवार	—	एकादशी, ब्र.स्व. योगीजी महाराज – स्मृति पर्व
(16)	दि.	18.9.2006,	सोमवार	—	ब्र.स्व. काकाजी महाराज – स्मृति पर्व
(17)	दि.	19.9.2006,	मंगलवार	—	मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी और ब्र. स्व. भगतजी महाराज - स्मृति पर्व

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi

TO,